

ब्राह्मण और सर्प

किसी नगर में हरिदत्त नाम का एक ब्राह्मण निवास करता था। उसकी खेती साधारण ही थी, अतः अधिकांश समय वह खाली ही रहता था। एक बार ग्रीष्म ऋतु में वह इसी प्रकार अपने खेत पर वृक्ष की शीतल छाया में लेटा हुआ था। सोए-सोए उसने अपने समीप ही सर्प का बिल देखा, उस पर सर्प फन फैलाए बैठा था।

उसको देखकर वह ब्राह्मण विचार करने लगा कि हो-न-हो, यही मेरे क्षेत्र का देवता है। मैंने कभी इसकी पूजा नहीं की। अतः मैं आज अवश्य इसकी पूजा करूंगा। यह विचार मन में आते ही वह उठा और कहीं से जाकर दूध मांग लाया।

उसे उसने एक मिट्टी के बरतन में रखा और बिल के समीप जाकर बोला, “हे क्षेत्रपाल! आज तक मुझे आपके विषय में मालूम नहीं था, इसलिए मैं किसी प्रकार की पूजा-अर्चना नहीं कर पाया। आप मेरे इस अपराध को क्षमा कर मुझ पर कृपा कीजिए और मुझे धन-धान्य से समृद्ध कीजिए।”

इस प्रकार प्रार्थना करके उसने उस दूध को वहीं पर रख दिया और फिर अपने घर को लौट गया। दूसरे दिन प्रातःकाल जब वह अपने खेत पर आया तो सर्वप्रथम उसी स्थान पर गया। वहां उसने देखा कि जिस बरतन में उसने दूध रखा था उसमें एक स्वर्णमुद्रा रखी हुई है।

उसने उस मुद्रा को उठाकर रख लिया। उस दिन भी उसने उसी प्रकार सर्प की पूजा की और उसके लिए दूध रखकर चला गया। अगले दिन प्रातःकाल उसको फिर एक स्वर्णमुद्रा मिली। इस प्रकार अब नित्य वह पूजा करता और अगले दिन उसको एक स्वर्णमुद्रा मिल जाया करती थी।

कुछ दिनों बाद उसको किसी कार्य से अन्य ग्राम में जाना पड़ा। उसने अपने पुत्र को उस स्थान पर दूध रखने का निर्देश दिया। तदानुसार उस दिन उसका पुत्र गया

और वहां दूध रख आया। दूसरे दिन जब वह पुनः दूध रखने के लिए गया तो देखा कि वहां स्वर्णमुद्रा रखी हुई है।

उसने उस मुद्रा को उठा लिया और वह मन ही मन सोचने लगा कि निश्चित ही इस बिल के अंदर स्वर्णमुद्राओं का भण्डार है। मन में यह विचार आते ही उसने निश्चय किया कि बिल को खोदकर सारी मुद्राएं ले ली जाएं। सर्प का भय था। किन्तु जब दूध पीने के लिए सर्प बाहर निकला तो उसने उसके सिर पर लाठी का प्रहार किया। इससे सर्प तो मरा नहीं और इस प्रकार से क्रुद्ध होकर उसने ब्राह्मण-पुत्र को अपने विषभरे दांतों से काटा कि उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। उसके सम्बन्धियों ने उस लड़के को वहीं उसी खेत पर जला दिया। कहा भी जाता है लालच का फल कभी मीठा नहीं होता है।

सीख : लालच बुरी बला है।

गुह्य और मनु

किभी नगर में रुद्रिन्द्र नाम का एक गुह्य निवास करता था। उसकी पत्नी भाण्डारी की थी, सुतः शण्डिका मन्वन्त वरुणाली की रहता था। एक बार गीर्वाण्डु में वरुण भी प्रकार सुपते पितृ पर वरुण की मीठल काया में ले आ क्रम था। भोए-भोए उभने सुपते मभीप की मनु का मिल रोपा, उम पर मनु उन देलार गैर था।

उमके रोपकर वरुण गुह्य विचार करने लगा कि के-न-के, वही भरे ब्रह्म का देवता है। मैंने कही उमकी पूर नहीं की। सुतः मैं सुए सुवम उमकी पूर करुंगा। वरुण विचार मन में सुते की वरुण उम और कही में एकर सुए भांग लाया।

उमे उभने एक भित्री के मरुतन में रापा और मिल के मभीप एकर गैला, “के ब्रह्मपाल! सुए उक भूए सुपके विषय में भालुभ नहीं था, उमलिय मैं किभी प्रकार की पूर-सुत्तन नहीं कर पाया। सुप भरे उम सुपरण के बभा कर भूए पर कृपा कीलिय और भूए एन-एनू में मभ्रु कीलिय।”

उम प्रकार पूरना करके उभने उम सुए के वही पर राप दिया और फिर सुपते पर के ले आ गया। सुभरे दिन पूरुःकाल एग वरुण सुपते पितृ पर सुया उे मवपुषम उभी भून पर गया। वरुण उभने रोपा कि एम मरुतन में उभने सुए रापा था उममें एक ध्रुवभूए रापी करे है।

उभने उम भूए के उकर राप लिया। उम दिन ही उभने उभी प्रकार मनु की पूर की और उमके लिए सुए रापकर गला गया। सुगले दिन पूरुःकाल उमके फिर एक ध्रुवभूए मिली। उम प्रकार सुग निरु वरुण पूर करता और सुगले दिन उमके एक ध्रुवभूए मिल गया करती थी।

कुछ दिनें गद उमके किभी काट में सुनू गृभ में रना पडा। उभने सुपते पूर के उम भून पर सुए रापने का निरुम दिया। उमनुभार उम दिन उमका पूर गया और वरुण सुए राप सुया। सुभरे दिन एग वरुण पुनः सुए रापने के लिए गया उे रोपा कि वरुण ध्रुवभूए रापी करे है।

उभने उम भूए के उम लिया और वरुण मन की मन में उभने लगा कि निस्त्रित की उम मिल के सुंदर ध्रुवभूए का सुभ्रु है। मन में वरुण विचार सुते की उभने निस्त्रय किया कि मिल के पितृकर भारी भूए ले ली रंग। मनु का सुव था। किनु एग सुए पीने के लिए मनु गदर निकला उे उभने उमके भिर पर लाठी का पूरुण किया। उममें मनु उे भरा नहीं और उम प्रकार में सुभ्रु के उभने गुह्य-पुत्र के सुपते विषयों में उंते में काए कि उमकी उद्वल भूए के गरें। उमके मभ्रुणियें ने उम लरुके के वही उभी पितृ पर एला दिया।

करा ही एउ है लालग का देल कही भीर नहीं देता है।

भीपः लालग वरी गला है।

सुनुवद - पुगवा सुनु